विकास की महत्वपूर्ण कड़ी है धर्म

प्रत्येक देश की अपनी प्रकृति और संस्कृति होती है। बिना संस्कृति के विकास का कोई अर्थ नहीं है। इसलिए बाद में कहा गया सभी देशों को अपनी-अपनी संस्कृति के अनुसार अपने विकास का मॉडल चुनने का अधिकार है।

– डा. मोहनराव भागवतजी

दुनिया के शज्तिशाली देशों ने विकास का एक ही प्रतिमान होने की बात कही। 1951 से देश में इसी परिभाषा पर लगातार प्रयोग चले। इसके बाद 1998 से धीरे-धीरे परिवर्तन शुरू हुआ। 2008 तक सारी व्यवस्था ने यू-टर्न ले लिया। फिर पूरी दुनिया ने माना कि विकास का एक प्रतिमान सभी जगह लागू नहीं हो सकता। प्रत्येक देश की अपनी प्रकृति और संस्कृति होती है। बिना संस्कृति के विकास का कोई अर्थ नहीं है। इसलिए बाद में कहा गया सभी देशों को अपनी-अपनी संस्कृति के अनुसार अपने विकास का मॉडल चुनने का अधिकार है। लेकिन कभी-कभी लगता है कि विकास का विचार करने वाले लोगों को पता है कि हमें किस तरह का मॉडल बनाना है। विकास शज़्द की कल्पना बदलती रहती है। विकास का सीधा संबंध प्रकृति से है, इसलिए विकास का भारतीय प्रतिमान पर विचार अत्यन्त सामायिक है। यद्यपि देर हो गई है, लेकिन इसके बाद भी हमको उस विचार को पूर्ण करने के लिए आगे बढ़ने की आवश्यकता है। अब प्रश्न आता है कि